भारतीय चित्रकला में राजस्थानी कलाशैली के ढूँढ़ार केन्द्र की अलंकृत चित्रशैली (वेशभूषा व आभूषण के सन्दर्भ में)

रीना
शोधार्थिनी, ललित कला विभाग
मेरठ कॉलिज, मेरठ
Email: renubrt86@gmail.com

Reference to this paper should be made as follows:

रीना

'भारतीय चित्रकला में राजस्थानी कलाशैली के ढूँढ़ार केन्द्र की अलंकृत चित्रशैली (वेशभूषा व आभूषण के सन्दर्भ में)'

Artistic Narration 2020, Vol. XI, No. 1, pp. 44-50

https://anubooks.com/?page_id=6863

सारांश

भारतीय चित्रकला में राजस्थानी कला एक प्रभावपूर्ण शैली के रूप में रही है। राजस्थानी चित्रकला का मूल भारतीय सभ्यता एवं संस्कृति है। राजस्थानी चित्रकला के विभिन्न केन्द्र है तथा इन केन्द्रों की कुछ शैलियों का उद्भव एवं विकास हुआ। राजस्थानी चित्रकला को प्रमुख चार केन्द्रों में बाँटा गया है जो इस प्रकार हैः–

(क) मेवाड़ केन्द्रः– उदयपुर, देवगढ़, नाथद्वारा आदि।

(ख) मारावाड़ केन्द्रः– जोधपुर, बीकानेर, किषनगढ़, अजमेर, नागौर आदि।

(ग) हाड़ौती केन्द्रः– कोटा, बूँदी, झालावाड़ आदि।

(घ) ढूँढ़ार केन्द्रः– जयपुर, अलवर, उनियारा, शैखावटी आदि।

प्रस्तावना

भारत में चित्रकला के लिए 15 वीं शताब्दी का समय पुनरूत्थान का समय रहा है। अतः सम्राटों, जागीरदारों, श्रेष्ठियों आदि ने अपने प्राचीन नगरों, धार्मिक और सांस्कृतिक प्रतिष्ठानों पर चित्रशैली को आश्रय और प्रोत्साहन दिया साथ ही नरेशों, कवियों, चित्रकारों आदि के आदान–प्रदान से राजस्थानी चित्रकला की अजस्रधारा को विभिन्न केन्द्रों की शैलियों, उपशैलियों को पल्लवित कर 17वीं–18वीं शती में चरमसीमा पर पहुँचाया इसी का सम्मिलित रूप आज दृष्टव्य है। प्राचीनकाल में अलवर जयपुर का अधिकांश भाग 'ढूँढ़ाड़' के नाम से जाना जाता था।

जयपुर शैली ढूँढ़ार केन्द्र के अन्तर्गत आती है। यहाँ पर शासकों ने अपने राज्यकालों में कलाकारों द्वारा विभिन्न विषयों पर आधारित लघुचित्र, भित्तिचित्र व पटचित्र को दुर्गों, हवेलियों, महलों, छतरियों, मन्दिरों आदि में चित्रित करवाया। तथा ढूँढ़ार की दूसरी शैली अलवर शैली मानी जाती है। इसकी स्थापना सन् 1775 ई0 सम्राट प्रताप सिंह ने की थी। अतः यहाँ पर भित्तिचित्र, पोथीचित्र, पटचित्र, व्यक्तिचित्र व हाथी दाँत पर चित्रण आदि दृष्टव्य है।

उनियारा शैली 'ढूँढ़ार' केन्द्र की तीसरी शैली मानी गयी है। यह टोंक जिले में स्थित है। अतः यहाँ पर छतरियों, दुर्गों, महलों, मन्दिरों, हवेलियों आदि में लघु चित्रण, भित्तिचित्रण व पोथीचित्रण करवाया गया। श्रृंगारिक, धार्मिक, लोक जीवन आदि विषयों पर सर्वाधिक चित्रण दिवारों पर देखने को मिलता है।

ढूँढ़ार केन्द्र की चित्र शैलियों में वेशभूषा व आभूषण

वेशभूषा का प्रचलन भारत में प्राचीनकाल से ही रहा है। सिन्धु घाटी की सभ्यता की खुदाई में प्राप्त मूर्तियाँ अलंकृत वस्त्रों से सुसज्जित है। भारत में राजस्थान भी वेशभूषा का एक विचित्र राज्य है। भारत में राज्य क्षेत्र व धर्म के अनुरूप ही वेशभूषा में विभिन्नता देखने को मिलती है। ढूँढ़ार केन्द्र की वेशभूषा के प्रति नारी हमेशा से ही प्रभावित रही है। तथा नारी सौन्दर्य की अभिव्यक्ति का उत्कृष्ट अंग वेशभूषा है। यहाँ की पारम्परिक वेशभूषा समय–समय पर परिवर्तित होती रही है। जब से मानव सभ्यता का विकास हुआ है। तभी से आभूषण पहनने की परम्परा रही है जो वर्तमान में भी प्रचलित है और भविष्य में भी रहेगी।

आभूषण पहनने का चलन स्त्री व पुरुष में समान ही था। अतः आज पुरुष की तुलना में स्त्रियाँ अधिक आभूषण पहनती है तथा आभूषणों से नारी का मन कभी नहीं भरता है। जो नारी के सम्पर्क में आते ही खिल उठते हैं तथा समाज में बदलाव आते रहते हैं। सोने के प्रति नारी के मन में कोई बदलाव नहीं आया। भारतवर्ष में राजधानी आभूषणों का बहुत अधिक योगदान है। ढूँढ़ार केन्द्र की जयपुर शैली, अलवर शैली, उनियारा शैली, शैखावटी षैली आदि चित्र शैलियों में वेशभूषा व आभूषण का वर्णन इस प्रकार है–

(क) जयपुर शैली : यहाँ पर नारी की वेशभूषा में लहँगा व घाघरा, चोली, पारदर्शी चुन्नी चित्रित है तथा पुरुष को जामा, दुपट्टा, पगड़ी चित्रांकित है। जयपुर कलम में नारी के आभूषणों में नथ, कानों में कर्णफूल व गले हार, चूड़ियाँ, कड़े, अँगूठी, छल्ला व हाथफूल तगड़ी चित्रित है तथा पैरों में बिछिया, पायल व जयपुरी जूतियाँ अंकित है। पुरुषों के आभूषण में कुण्डल, जंजीर, कंठी, बाजुबन्द,

छल्ला, अँगुठी आदि तथा टीका, जयपूरी जूतियाँ अंकित है।

(ख) अलवर शैली : इस शैली में स्त्री को लहँगा, चोली, पारदर्शी चुन्नी, चित्रित है। पुरुषों को अंगरखा, रूमाल, पगड़ी चित्रित है। यहाँ पर स्त्री के आभूषणों में झुमके, माथे टीका, कंठी, मालाएँ, लोंग, बाजूबन्द, कंगन, चूड़ियाँ, अँगूठी, छल्ला, पायल, बिछिया व तगड़ी पहने अंकित है। पुरुषों में बाली, कंठी, बाजूबन्द, छल्ला, अँगुठी अंकित है तथा टीका, कड़ा व जूतियाँ चित्रित है।

(ग) उनियार शैली : यहाँ पर स्त्री की वेशभूषा में पारदर्शी चुन्नी, लहँगा, चोली का चित्रण है। पुरुषों की वेशभूषा में जामा व पायजामा, पटका अंकित है। नारी के आभूषणों में टीका, कुण्डल, लोंग, बाजूबन्द, कंगन, चूड़ियाँ, पायल, बिछिया अंकित है। पुरुषों में मुकुट, टीका, माला, बाजूबन्द, कड़े तथा जूतियाँ चित्रित है।

(घ) शैखावटी शैली : यहाँ पर नारी वेशभूषा में लहँगा, चोली, पारदर्शी चुन्नी अंकित है। पुरुषों में लम्बा जामा व पायजामा, पटका, निर्मित है। स्त्री आकृति को झूमके, टीका, कंठी, मालाएँ, नथ व बाजूबन्द, चूड़ियाँ, कंगन, छल्ला, अँगुठी, पायल, बिछिया चित्रित है। पुरुषों में मालाएँ, कुण्डल, बाजूबन्द अँगुठी व छल्ला चित्रित हैं।

राजस्थानी कला–शैली का परिचय

भारतीय चित्रकला के क्षेत्र में राजस्थानी कला एक प्रभावपूर्ण षैली के रूप में रही है। जिसके गहन अध्ययन में रूचि उत्पन्न होना एक कलाप्रेमी के लिए स्वाभाविक है। राजस्थानी चित्रकला का मूल भारतीय सभ्यता एवं संस्कृति है। भारतवर्ष में राजपूत राजाओं के रहने के कारण ही यह प्रदेश राजस्थान कहलाया। क्षेत्रफल की दृष्टि से राजस्थान को भारत के राज्यों में प्रथम स्थान प्राप्त है। जयपुर इसकी राजधानी है। राजस्थानी चित्रकला के विभिन्न केन्द्र हैं। इन केन्द्रों की कुछ शैलियों का उद्‌भव एवं विकास हुआ। राजस्थानी चित्रकला को प्रमुख चार केन्द्रों में बाँटा गया है जो इस प्रकार हैंः–

(क) मेवाड़ केन्द्र : उदयपुर, देवगढ़, नाथद्वारा आदि।

(ख) मारावाड़ केन्द्र : जोधपुर, बीकानेर, किशनगढ़, अजमेर, नागौर आदि।

(ग) हाड़ौती केन्द्र : कोटा–बूँदी, झालावाड़ आदि।

(घ) ढूँढ़ार केन्द्र : जयपुर, अलवर, उनियारा, शेखावटी आदि।

भारत में चित्रकला के लिए 15वीं शताब्दी का समय पुनरूत्थान का समय रहा है। अतः भारतीय इतिहास के पृष्ठों का अध्ययन करने से ज्ञात होता है कि यहाँ पर कितने रजवाड़े स्थापित हुए व कितने मिटे तथा यहाँ के सम्राटों, जागीरदारों, श्रेष्ठियों, महन्तों ने अपने प्राचीन नगरों, धार्मिक और सांस्कृतिक प्रतिष्ठानों पर चित्रशैली को आश्रय और प्रोत्साहन दिया व साथ ही नरेशों, कवियों, चित्रकारों, शिल्पाचार्यों आदि के आदान–प्रदान से राजस्थानी चित्रकला की अजस्रधारा को विभिन्न केन्द्रों की शैलियों को परिपल्लवित कर 17–18वीं षती में इसको चरमसीमा पर पहुँचाया और इसी का सम्मिलित रूप आज देखने को मिलता है।

प्राचीनकाल में अलवर जयपुर का अधिकांष भाग 'ढूँढ़ाड' के नाम से जाना जाता था। ढूँढ़ नामक राक्षस के कारण इस प्रदेश का नाम ढूँढ़ाड पड़ा। तथा कछवाहा सम्राट धोलाराय के इस क्षेत्र से चले

जाने के समय से ही यह केन्द्र ढूँढ़ार कहलाने लगा और जो वर्तमान में 'ढूँढ़ार' नाम से ही प्रसिद्ध है। इसके अन्तर्गत बहुत सी शैलियाँ आती हैं जयपुर, अलवर, उनियारा, शेखावटी आदि शैलियाँ देखने को मिलती हैं।

जयपुर शैली

राजस्थान की राजधानी जयपुर राजस्थान के पूर्वी भाग में स्थित है। जयपुर नगर की स्थापना 18 नवम्बर 1727 ई0 में सवाई जयसिंह द्वारा की गयी थी। यह भरतपुर, अलवर, करौली, अजमेर, जोधपुर, किशनगढ़, बीकानेर, सीकर, चूरू, कोटा बूँदी, टोंक व उदयपुर आदि की सीमाओं से घिरा हुआ है। जयपुर ढूँढ़ार केन्द्र की एक शैली मानी जाती है। यहाँ पर कछवाहा वंश के शासक निवास करते थे। और उनका यह प्रदेश ढूँढ़ार राज्य के नाम से प्रसिद्ध था।

यहाँ पर राजपूत शासकों के समय में दुर्गों, महलों, हवेलियों, भवनों, छतरियों, बैराठ, मन्दिरों आदि में चित्रांकन का कार्य किया गया। जो आज भी यहाँ देखने को मिलता है। इस चित्र शैली में राधा–कृष्ण की लीलाओं, राग–रागिनी, नायिका भेद, आखेट, व्यक्ति चित्र, भागवत पुराण, दुर्गासप्तशती, आदि विषयों पर लघु चित्र भित्ति चित्र व पट चित्र विभिन्न पद्धतियों में चित्रित किये गये हैं।

अलवर शैली

अलवर कलम दिल्ली–जयपुर रेलमार्ग पर बसा है। यह हरियाणा, भरतपुर तथा जयपुर की सीमाओं से घिरा हुआ है। अलवर की पहाड़ियों के बीच प्रकृति की ममतामयी गोद में चित्रकला की जिस शैली का जन्म हुआ वह लघुचित्र शैली अलवर शैली के नाम से प्रसिद्ध हुई। चित्रकारों की साधना तथा कलाभक्त सम्राटों के संरक्षण में यह चित्रशैली पल्लवित और पुष्पित हुई। राजस्थान की समृद्ध सांस्कृतिक परम्परा में अलवर का विशेष योगदान रहा है।

यह उपशैली 1775 ई0 में जयपुर से अलग होकर सम्राट राव प्रताप सिंह के शासनकाल में स्वतन्त्र अस्तित्व को प्राप्त करने में सफल रही। यहाँ पर विभिन्न सम्राटों के राज्यकालों में बहुत से चितेरो द्वारा भित्ति चित्र, पोथी चित्र, पट चित्र, व्यक्ति चित्र व हाथी दाँत पर चित्रण आदि देखने को मिलता है।

उनियारा शैली

उनियारा शैली ढूँढ़ार केन्द्र के अन्तर्गत आती है। यह टोंक जिले में स्थित है। उनियारा ठिकाना बूँदी और जयपुर क्षेत्र की सीमाओं पर स्थित है। बूँदी और उनियारा के वैवाहिक सम्बन्धों के कारण बूँदी के प्रभाव अपनाकर एक नई उपशैली का उद्‌भव हुआ जिसे उनियारा कहा गया। 'नरूका' आमेर के कछवाहों में नरूजी के वंशज माने जाते हैं। उनियारा ठिकानों के सम्राटो ने अपने राज्यकाल में 'छतरियाँ', 'रंगमहल', एवं 'मन्दिर' आदि को चित्रांकित करवाया।

राजा राव सरदार सिंह (1740–1777 ई0) की रूचि कला में रही है। इन्होंने अपने समय में बारहमासा, रामायण, भागवतपुराण, नायक–नायिका कृष्णलीला, शिवपार्वती, व्यक्ति चित्र आदि विषयों पर आधारित कलाकारों द्वारा उनियारा कलम के महलों, दुर्गों, मन्दिरों, छतरियों, भवनों, हवेलियों, आदि लघु चित्रण व भित्ति चित्रण करवाया गया। लघु चित्रों व पोथी चित्रों की उत्कृष्टता के आधार पर ही उनियारा कलम का एक अलग स्वरूप दिखाई देता है। 'राम–सीता, लक्ष्मण व हनुमान' मीरबक्स चित्रकार द्वारा निर्मित प्रसिद्ध कलाकृति मानी जाती है।

शेखावटी शैली

यह जयपुर, चूरू, गंगानगर, नागौर, अलवर, हरियाणा आदि से घिरा हुआ है।

15वीं सदी में कछवाहा वंश में 'बालाजी' के पौत्र 'शेखाजी' ने एक विस्तृत राज्य स्थापित किया जो आगे चलकर शेखावटी उपशैली के नाम से प्रसिद्ध हुआ। चित्रकला के अध्ययन के दृष्टिकोण से शेखावटी स्थल भी हाल ही में प्रकाश में आने लगा है। अतः शेखावटी शैली में कुछ चित्राकृतियाँ भारतीय वास्तुशास्त्र के आधार पर लक्ष्मणगढ़, रामगढ़, नवलगढ़ आदि की हवेलियों में चित्रित हुई। और इनका अध्ययन करने से यह ज्ञात होता है कि इन हवेलियों को लकड़ी के बड़े–बड़े कपाटों से सजाया गया है। और यहाँ की चित्राकृतियों में जयपुर की विशेषताएँ अधिक देखने को मिलती हैं तथा गोइनका हवेली में 1850 ई0 में चित्रित 'कृष्ण की आठ गोपियाँ एक हाथी के रूप में' उत्कृष्ट भित्ति चित्र है।

ढूँढ़ार केन्द्र की चित्र शैलियों में वेशभूषा व आभूषण

वेशभूषा का प्रचलन भारत में प्राचीनकाल से ही रहा है। सिन्धु घाटी की सभ्यता की खुदाई में प्राप्त मूर्तियाँ अलंकृत वस्त्रों से सुसज्जित है। भारत में राजस्थान भी वेशभूषा का एक विचित्र राज्य है। अतः भिन्न–भिन्न देशों की वेशभूषा एक दूसरे से नितान्त भिन्नता लिए होती है। भारत में राज्य क्षेत्र व धर्म के अनुरूप ही वेशभूषा में विभिन्नता देखने को मिलती है। ढूँढ़ार केन्द्र की वेशभूषा के प्रति नारी हमेशा से ही प्रभावित रही है। तथा नारी सौन्दर्य की अभिव्यक्ति का उत्कृष्ट अंग वेशभूषा है। अगर बात सभ्यता और सुन्दरता को एक साथ जोड़ने की होती तो ढूँढ़ार केन्द्र की वेशभूषा के सामने किसी भी वेशभूषा का टिक पाना संभव नहीं है।

यहाँ की पारम्परिक वेशभूषा समय–समय पर परिवर्तित होती रही है। और नये–नये डिजाईनों में देखने को मिलती रही है। पुरुष भी यहाँ की वेशभूषा को काफी पसन्द करते हैं। ढूँढ़ार स्कूल की नारी व पुरुष की वेशभूषा की आज विदेशों में भी बहुत माँग रहती है। यहाँ की वेशभूषा विदेशों तक अपना सिक्का जमाये हुए हैं तथा कारीगर वेशभूषा की रंगाई–कढ़ाई व अंकन का कार्य बहुत ही उत्कृष्ट ढ़ंग से करते हैं। यहाँ के बांधनी, सांगानेरी छाप आदि की बनी वेशभूषा की बहुत माँग रहती है।

आभूषण समृद्धि एवं वैभव के प्रतीक माने जाते हैं। जब से मानव सभ्यता का विकास हुआ है। तभी से आभूषण पहनने की परम्परा रही है जो वर्तमान में भी प्रचलित है और भविष्य में भी रहेगी। राजस्थान में प्रचलित विभिन्न आभूषणों का वर्णन 'ऋग्वेद' में भी होता है। राजस्थान भी आभूषणों का एक विचित्र राज्य है। आभूषण यहाँ की कुल देवियों के सुहाग का प्रतीक माने गये हैं। ढूँढ़ार स्कूल के कलाकारों ने आभूषणों का बहुत ही कलात्मक चित्रण किया है। आभूषण बनाने वाले जयपुर घराने की सभी औरतें भी सोने के गहने तैयार करती हैं।

प्राचीनकाल में भारत में सोने का इतना बोलबाला था कि भारत को सोने की चिड़ियाँ कहा जाता था। आभूषण पहनने का चलन स्त्री व पुरुष में समान ही था। परन्तु सुन्दरता में मनुष्य का स्वाभाविक अनुराग रहा है। अतः आज पुरुष की तुलना में स्त्रियाँ अधिक आभूषण पहनती है। इसीलिए नारी का सौन्दर्य अभिव्यक्ति का सबसे महत्वपूर्ण अंग आभूषण ही माने जाते हैं। तथा आभूषणों से नारी का मन कभी नहीं भरता है। आभूषण तो आभूषण हैं जो नारी के सम्पर्क में आते ही खिल उठते हैं। तथा संकट के समय भी आभूषण नारियों के काम में आते हैं। समाज में बदलाव आते रहते हैं। रीति–रिवाज, मान्यताएँ

बदलती रहती हैं, पर सोने के प्रति नारी के मन में कोई बदलाव नहीं आया।

भारतवर्ष में राजधानी आभूषणों का बहुत अधिक योगदान है। विदेशों में भी जो आभूषण बनते हैं लेकिन उनमें मीनाकारी भारत में ही होती थी। जयपुर की मीनाकारी बहुत प्रसिद्ध है। भारतीय कलाकारों में ब्रोच और चूड़ियाँ बनाने में है, वह वाकई काबिले तारीफ है। यहाँ के आभूषणों को विदेश तक में ख्याति दिलाने में फिल्मों का बहुत सहयोग रहा है। ढूँढ़ार केन्द्र की जयपुर शैली, अलवर शैली, उनियारा शैली, शेखावटी शैली आदि चित्र शैलियों में वेशभूषा व आभूषण का वर्णन इस प्रकार है–

(क) जयपुर शैली

यहाँ पर नारी आकृतियों की वेशभूषा में अलंकरण युक्त लहँगा व चुन्नटदार घाघरा चित्रित है। पारदर्शी चुनरी जिसको गोटे व सितारों से सुसज्जित है। ऊँची चोली का चित्रण हुआ है जिसमें डोरी लगायी गयी है। पुरुष आकृत्तियों को लम्बा घेरदार जामा, गले में दुपट्टा या पटका का चित्रण है। तथा सिर पंचरंगा पगड़ी अंकित हैं।

जयपुर शैली की नारी आकृत्तियों को सिर पर शीशफूल अंकित है, जिसको मोतियों से बनाया गया है। नासिका में नथ, कानों में, कर्णफूल पत्ती आदि को चित्रित किया गया है। गले में तीन से आठ लड़ी हार पहने अंकित है। हाथ में लटकन युक्त बाजूबन्द व कलाईयों में लाख व काँच की चुड़ियाँ कड़े चित्रित किये गये हैं। अँगुलियों में छल्ला, अँगूठी व हाथफूल का चित्रण हुआ है। कटि पर तगड़ी निर्मित है। पैरों में बिछिया व अलंकरण युक्त पायल अंकित है। पैरों में अलंकृत जयपुरी जूतियाँ चित्रित की गयी। पुरुशों के आभूशण में कानों में कुण्डल अंकित है। गले में जंजीर, कंठी व मालाएँ निर्मित हैं। हाथ में बाजूबन्द व अँगुली में छल्ला, अँगुठी चित्रित है। माथे पर टीका तथा पैरों में जूतियाँ चित्रित हैं।

(ख) अलवर शैली

इस शैली के चित्रों में स्त्री आकृत्तियों को गोटेदार अलंकरण युक्त लहँगा चित्रित है। चोली व गोटा लगी पारदर्शी चुनरी अंकित है। पुरुषों को कमर तक अंगरखा व गले में रूमाल अंकित है। तथा जयपुरी पंगड़ी पहने चित्रित हैं।

अलवर कलम में स्त्री के कानों में झुमके अंकित है। माथे पर माँग टीका जो अलंकरण युक्त है चित्रित किया गया है। गले में मालाएँ, कंठी, हार आदि का चित्रण देखने को मिलता है। नाक में लोंग, नथ निर्मित है। हाथ में डिजाईननुमा बाजूबन्द व कलाई में कंगन, चूड़ियाँ अंकित है। तथा हाथों की अँगुलियों में नगों से बनी अँगुठी व छल्ला अंकित है। कटि में तगड़ी अंकित है। तथा पैरों में बिछिया व अलंकरण पायल चित्रित है। पुरुषों कानों में बूँदे, बाली अंकित है। गले में जंजीर, कंठी पहने बनाया गया है। हाथ में बाजूबन्द चित्रित किया है। अँगुली में छल्ला व अँगुठी अंकित की गी है। माथे पर टीका तथा पैरों में कड़ा पहने अंकित है तथा पैरों में जूतियाँ भी चित्रित की गयी है।

(ग) उनियारा शैली

इस शैली में स्त्री आकृतियों की वेशभूषा में पारदर्शी चुन्नी, लहँगा–चोली व कहीं–कहीं नारी को साड़ी पहने भी चित्रित किया गया है। लहँगा व साड़ी पर छोटे–छोटे फूलों के डिजाईन बनाये गये हैं। पुरुषों की वेशभूषा में लम्बा जामा, पायजामा तथा गले में पटका निर्मित है।

यहाँ पर नारी आकृत्तियों को सिर पर माँग टीका है। कानों में कुण्डल, झुमके आदि का अंकन है।

नासिका में नथ (लोंग) जिसमें मोती लगे हैं। बाहों में बाजूबन्द, कलाई में कंगन व चूड़ियाँ चित्रित हैं। पैरों में पायल, बिछिया अंकित है। पुरुषों के सिर पर मुकुट चित्रित है तथा माथे पर टीका अंकित है। कानों में कुण्डल, गले में मालाएँ, हाथों में बाजूबन्द व कड़े तथा पैरों में जूतियाँ भी निर्मित हैं।

अतः यहाँ की वेशभूषा व आभूषण जयपुर शैली से मिलती जुलती हैं जिसका चित्रांकन चित्रकार ने बहुत ही उत्तम ढ़ंग से किया है।

(घ) शेखावटी शैलीः– यहाँ पर नारी वेशभूषा में बॉर्डर युक्त लहँगा अंकित है। चोली व गोटेदार पारदर्शी चुन्नी बनायी गयी है। पुरुष वेशभूषा में लम्बा जामा व पायजामा चित्रित किया है। सिर पर पगड़ी तथा गले में पटका अंकित है। स्त्री आकृतियों के आभूषणों में कानों में झुमके चित्रित है। माथे पर अलंकृत टीका अंकित किया है। गले में कंठी व मालाएँ अंकित की गयी है। नासिका में नथ, हाथों में लटकन युक्त बाजूबन्द का चित्रण है। कलाई में चूड़ियाँ व कंगन चित्रित है। हाथ की अँगुली में अँगुठी व छल्ला चित्रित है। पैरों में डिजाईन युक्त पायल व बिछिया का अंकन हुआ है। गले में मालाएँ व कानों में कुण्डल चित्रित किये गये हैं। हाथों में बाजूबन्द व अँगुली में अँगुठी, छल्ला निर्मित हैं।

ढूँढ़ार क्षेत्र की कलाकृत्तियों में भिन्नता प्रदर्शित करने में वेशभूषा व आभूषणों का महत्वपूर्ण योगदान रहा है। यहाँ पर चित्रकार ने धार्मिक कलाकृत्तियों में चित्रित मानवाकृत्तियों को एक दूसरे से अलग दिखाने में वेशभूषा व आभूषणों का प्रयोग किया है तथा यह कार्य वेशभूषा व आभूषणों से ही संभव हो सका है। और इस चित्रण कार्य को चित्रकार द्वारा बहुत ही उत्कृष्टता से किया गया है।

संदर्भ ग्रन्थ

1. एम0वसीम, उपकार प्रवक्ता भर्ती परीक्षा, कला, पृ–**28**
2. अग्रवाल डॉ0 श्याम बिहारी, *भारतीय चित्रकला का इतिहास* (मध्य कालीन), पृ–**74**
3. नीरज डॉ0 जय सिंह, *राजस्थानी चित्रकला,* जयपुर, पृ, **92, 93**
4. शर्मा, राजन, शोध प्रबन्ध (चौ0 चरण सिंह विश्वविद्यालय, मेरठ), 2002, मेवाड़ किशनगढ़ जयपुर और बूँदी शैली के लघु चित्रों में मानव रूपांकन का तुलनात्मक अध्ययन।
5. शर्मा, डॉ0 गोपीनाथ, *राजस्थान का इतिहास*।
6. नीरज डॉ0 जय सिंह एवं माथुर डॉ0 बेला, अलवर की चित्रांकन परम्परा, जयपुर, 2011
7. प्रताप डॉ0 रीता, *भारतीय चित्रकला एवं मूर्तिकला का इतिहास,* 2008
8. प्रताप डॉ0 रीता, *जयपुर की चित्रांकन परम्परा,* जयपुर